आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 11 March 2022 **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *"आज दादी जी के पुण्य तिथि पर हम उन जैसे बनने की उनके गुणों से स्वयं को सजाने की पुरुषार्थ करे "*

आज दादी **हृदयमोहीनी जी का स्मृति दिवस है**, उनकी पुण्यतिथि है। एक वर्ष हुआ है उनको हम सबसे विदाई लेते हुए।

यह वो महान आत्मा थी जिनपर शुरू से ही भगवान की नज़र थी। जब वो छोटी थी, नौ दस साल की, बाबा ने उसे देखकर कहा था, उसकी नयनों को देखकर कहा था कि ....

" तुम्हारी यह नयन बहुत बड़ी सेवा करेंगी "

और हम पचास साल देखे भी कैसे उनके नयनों के द्वारा भगवान ने संसार को दृष्टि दी। अपने प्यारे बच्चों को प्यार दिया। दृष्टि से निहाल किया। और उनकी दृष्टि से हम भगवान से मिल सके।

कितनी महत्वशाली है यह मनुष्य आत्मा कि जिसने करोड़ों करोड़ों लोगों को भगवान से मिलाया। जिनके वायब्रेशन्स बहुत ही सुन्दर थे। जो भी मिलता था वो उनका हो जाता था।

कई बार VIP उनसे मिलने आये उनकी महिमा करते हुए चले गये। तकलीफें हुई शरीर की, उनकी ईलाज करने आये और भक्त बनकर चले गये।

ऐसी भी **स्थिति** थी, जब वो बोल नहीं पाती थी, ज्ञान नहीं देती थी, डाक्टर जो हाईली एजुकेटेड थे उनके **वायब्रेशन्स** को कैच करके उनको नमन करते थे।

कहते थे, **" पेशेन्ट तो बहुत आये हमारे पास परन्तु ऐसा पेशेन्ट हम आज तक नहीं देखा "**

उनसे दुआयें लेने आते थे। इलाज क्या करते थे, बस दुआयें ले जाते थे। ऐसे महान दादी जिनके अंदर शिवबाबा के प्रति सम्पूर्ण डेडिकेशन था, उन्होंने कभी किसी भी बात में ना नहीं किया।

उनकी तबियत खराब, बाबा नहीं आ सकते थे। पार्टी आई हुई है, दादी जी उनके पास पहुँचती है और रिक्युयेस्ट करती है कि ....

" गुलजार, बहुत बाबा के बच्चे आये हुए है "

..... और दादी खड़ी हो जाती है अपने बेड से और तैयार हो जाती है बाबा के आह्वान के लिए।

यह कोई छोटी बात नहीं है। जब उनकी तबियत बहुत ज्यादा खराब होती थी ... बुखार है ... काफ़ी ... खांसी आ रही है ... तो भी उन्होंने कभी सेवा के लिए ना नहीं किया।

और जो भगवान के आगे हाँ-जी हाँ-जी करते है, भगवान स्वयं उनके आगे हाँ-जी करता है, हुजूर-हाजिर रहता है।

तो ऐसी महान आत्मा की पालना हमें मिली है। दादी जी पहले देहली जोन के इंचार्ज थे। फिर **जॉयेन्ट चीफ** अब ब्रह्माकुमारीज बनी, फिर एडिशनल चीफ बनी। और फिर **चीफ** बनी।

बहुत बड़ी **योगदान** उनका ईश्वरीय सेवा के लिए है। वैसे तो किसी ऑर्गनाइजेशन में जब तक कोई श्रेष्ठ आकर्षक पार्सोनालीटि न हो, तब तक लोग वहाँ ज्यादा नहीं आते।

दादी जी ऐसी **पार्सोनालीटि** थी, जिनके दर्शन करके ही लोग आनन्दित होते थे। जिन्हें एकबार देखना चाहते थे, उन्हें देखकर अपने जीवन को धन्य-धन्य समझते थे।

ऐसी महान दादी, जो **पवित्रता** की प्रतिमूर्त थी, जिनके मुख से कभी कड़ुवे वचन नहीं निकले, जिन्होंने किसी को दुःख नहीं पहुँचाया, जो बहुत **निरहंकारी, नम्रचित्त थी, सॉफ्ट एन्ड सुईट** थी बहुत ही ज्यादा, बहुत सरलचित्त थी .....

ऐसी दादी जी को हम आज शत-शत नमन करते है। और हमारी श्रद्धांजलि तो यही है, कि जैसे दादी जी थी, वैसे हम सब भी बन जाये। तो **शिवबाबा** का यह स्थापना का कार्य बहूत तीव्र गति से आगे बढ़ेगा।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org | **Website**: www.shivbabas.org